नसीरुद्दीन शाह की बातों का जवाब नहीं है, हनुमान की जाति जरूर जानते हैं

इंस्पेक्टर की हत्या की बजाय गाय की हत्या को महत्व देने वाली पार्टी का है यह हाल

मजदूर मोर्चा

नई दिल्ली: दुनिया के कई मुल्कों के नेता सुबह उठकर जब यह सोचते हैं कि आज वह अपने देश की तरक्की के लिए जनता के बीच क्या बोलने वाले हैं तो भारत में नेता सुबह-सुबह यह सोचते हैं कि आज राम और हनुमान की क्या जाति बतानी है। उत्तर प्रदेश के लोगों को और किस तरह मूर्ख बनाया जा सकता है। देश में किसान-मजदूरों, असहनशीलता, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के बारे में चल रहे गंभीर मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए रोजाना एक कहानी बनाकर उछाल दी जाती है। पूरा पूंजीवादी मीडिया उस पर फर्जी बहसें कराता है और हम लोग अपने घरों और समूहों में चर्चा करते हैं। जिंदगी आगे नहीं बढ़ती।

बुलंदशहर हिंसा के दौरान इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की हत्या के मामले में कई पूर्व नौकरशाह खुलकर सामने आए। उन्होंने न केवल पूरे प्रकरण पर नाराजगी जतायी बल्कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर हमला बोलते हुए उनके इस्तीफे की मांग की है। इस सिलसिले में उन्होंने एक खुला पत्र जारी किया है। जिसमें उन्होंने घटना के बाद इलाके में फैले तनाव पर गहरी चिंता जाहिर की है।

पत्र में उन्होंने कहा कि इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की हत्या अगर किसी राजनीतिक द्वेष के चलते हुई है तो ये पूरे लोकतंत्र और व्यवस्था के लिए बेहद खतरनाक संकेत है। उन्होंने कहा है कि इस घटना से ये बात साफ हो गयी है कि देश के सबसे ज़्यादा आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में शासन प्रणाली के मौलिक सिद्धांतों, संवैधानिक नीतियों और मानवीय सामाजिक व्यवहार तहस नहस हो चुके हैं। राज्य के मुख्यमंत्री धर्मांध हो गए हैं और मुख्यमंत्री से ज्यादा वो पुजारी की तरह व्यवहार कर रहे हैं साथ ही उनका पूरा जोर बहुसंख्यकों के प्रभुत्व के एजेंडे को स्थापित करना है।

पत्र में कहा गया है कि सोची समझी साजिश के तहत लगता है चीजों को अंजाम दिया गया है। पहले ऐसे हालात उत्पन्न किए गए जिससे सांप्रदायिक तनाव पैदा हो और उसके बाद इंस्पेक्टर सुबोध को निशाना बना दिया गया। उत्तर प्रदेश में इस तरह की पहले भी घटनाएं हुई हैं।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ जब भीड़ द्वारा एक पुलिसकर्मी की हत्या की गई हो, न ही यह गौरक्षा के नाम होने वाली राजनीति के तहत मुसलमानों को अलग-थलग कर सामाजिक विभाजन पैदा करने का पहला मामला है। अफसरों का कहना है कि इस मामले में न्यायालय को भी चुप नहीं रहना चाहिए और उसे मामले का खुद संज्ञान लेना चाहिए। क्योंकि ये मामला संवैधानिक मशीनरी के खराब होने का है। **पत्र में अफसरों ने कहा है कि उन लोगों को हालात की गंभीरता को देखते हुए पहली बार इस तरह से सामने आना पड़ा है। उनका कहना है कि देश और समाज एक ऐसे नाजुक मोड़ पर खड़े हो गए हैं जब लोगों को खुद ही आगे आकर उन्हें बचाना होगा।**

पत्र जारी करने वालों में मुख्य रूप से पूर्व विदेश सचिव श्याम सरन, पूर्व विदेश सचिव सुजाता सिंह, योजना आयोग के पूर्व सचिव एनसी सक्सेना, अरुणा रॉय, रोमानिया में भारत के पूर्व राजदूत जूलियो रिबेरो, प्रशासकीय सुधार आयोग के पूर्व अध्यक्ष जेएल बजाज, दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल नजीब जंग और पूर्व आईएएस अधिकारी हर्ष मंदर सहित कुल 83 पूर्व नौकरशाह शामिल हैं। आपको याद होगा कि पिछली तीन दिसंबर को बुलंदशहर के स्याना में गौकशी को लेकर उग्र हुई भीड़ ने थाना कोतवाली में तैनात इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की हत्या कर दी थी।

जवाब नहीं आया, हनुमान को मुसलमान बना डाला

इन पूर्व नौकरशाहों की बातों का जवाब देने की बजाय यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने अपने मंत्री से बयान दिलवाया कि एक इंस्पेक्टर की मौत से ज्यादा महत्वपूर्ण गायों की हत्या है। ये पूर्व नौकरशाह गाय के मुद्दे को दबाना चाहते हैं। योगी ने अपने एक

और गुर्गे बुक्कल नवाब को खड़ा किया और उससे जवाब दिलवाया कि हनुमान तो मुसलमान थे। दोनों बयान रणनीतिक थे। एक बयान के जरिए पूर्व नौकरशाहों को उनकी औकात बता दी गई कि तुम्हारे इंस्पेक्टर की मौत से ज्यादा जरूरी है गाय की रक्षा। दूसरा बयान देने वाले से इसलिए बयान दिलवाया गया ताकि लोगों का ध्यान उन पूर्व नौकरशाहों द्वारा उठाए गए मुद्दों की तरफ न जाए। क्योंकि नेता यूपी की जनता को बेवकूफ समझते हैं और इस बयान के बाद हनुमान की जाति तलाशने में जुटे रहेंगे। हुआ भी वही। किसी ने पूर्व नौकरशाहों की बातों पर ध्यान नहीं दिया। जिस शख्स ने हनुमान को मुसलमान बताया, उसका संक्षिप्त इतिहास यह है कि यह पहले मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी में रहा। दो विधानसभा चुनाव हार गया फिर विधानस परिषद का सदस्य बना। उसकी विधान परिषद सदस्यता खत्म होने लगी और सपा भी सत्ता से बेदखल हो गई तो इसने भाजपा का दामन थाम लिया। अब यह भाजपा से विधान परिषद सदस्य है।

नसीरूद्दीन शाह ने क्या गलत कहा

नसीरुद्दीन शाह अपने बयान से न्यूज चैनलों के प्राइम टाइम की बहस का मुद्दा बन गए। अब उलट उनसे सवाल पूछा जा रहा है। ऐसी नौबत बनाई जा रही है कि उनको भी अपनी देशभक्ति साबित करने पर मजबूर होना पड़े. आमिर खान ने भी कुछ-कुछ ऐसा ही बयान दिया था और उन्हें आखिर में सफाई देनी पड़ी थी। उन्हें तो पाकिस्तान भेजने तक का फ़तवा भी मिल गया था।

'कारवां-ए-मोहब्बत इंडिया' से एक इंटरव्यू में नसीरुद्दीन शाह ने बुलंदशहर हिंसा की घटना पर कमेंट किया था। उन्होंने कहा था कि उन्हें अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता है। वो डरे हुए नहीं गुस्से में हैं। उन्होंने कहा कि देश में जहर फैलाया गया है और अब इसे रोकना मुश्किल है। शाह ने कहा था कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी किसी खास धर्म की शिक्षा नहीं दी है। उन्होंने अपने बच्चे इमाद और विवान को धार्मिक शिक्षा नहीं देना तय किया था क्योंकि उनका मानना है कि 'खराब या अच्छा होने का किसी धर्म से कोई लेना-देना नहीं है'। इसलिए उन्हें डर है कि अगर कभी भीड़ ने उनके बच्चों को घेरकर पूछ लिया कि वो किस धर्म के हैं, तो वो क्या जवाब देंगे? शाह ने देश में हो रही मॉब लिंचिंग की घटनाओं के क्रम में जुड़े बुलंदशहर हिंसा पर टिप्पणी भी की। उन्होंने कहा कि देश में गाय के जान की कीमत एक पुलिसवाले से ज्यादा हो गई है। यहां गाय की मौत को पुलिस अधिकारी की हत्या से ज्यादा तवज्जो दी गई। उन्होंने कहा कि लोग कानून को अपने हाथ में ले रहे हैं और उन्हें खुली छूट भी दे दी गई है।

अजमेर में नहीं होने दिया कार्यक्रम

नसीरुद्दीन का यह बयान बुधवार को वायरल हुआ था और गुरुवार को राजस्थान के अजमेर में हिंदूवादी संगठनों ने उनका कार्यक्रम नहीं होने दिया। उन्हें अजमेर लिटरेरी फेस्टिवल का उद्घाटन करना था, अपनी किताब रिलीज करनी थी लेकिन भगवा गुंडा वाहिनी अजमेर में सम्मेलन स्थल पर पहुंची, उसने नसीरुद्दीन शाह के पोस्टर पर स्याही फेंकी और उग्र नारेबाजी की। कुछ संगठनों ने उन्हें पाकिस्तान भेजने का टिकट भी मंगवा दिया। नसीरुद्दीन की पत्नी रत्ना पाठक थियेटर जगत की बड़ी हस्ती रही हैं। दोनों ने अपने बेटों का लालन-पालन सेकुलर शख्स के रूप में किया है। बॉलिवुड का यह परिवार आज तक भगवा गुंडों के सामने कभी नहीं झुका, इसलिए इनकी हर बात का नोटिस लेकर इन्हें निशाने पर रखा जाता है। टीवी चैनलों पर इनकी छवि खराब करने वाली बहसें चलाई जाती हैं।

जवाब नहीं आया, हनुमान को जाट बता डाला

एक इंस्पेक्टर की मौत से ज्यादा गाय की हत्या को ज्यादा तवज्जो देने की नसीरुद्दीन शाह के बयान का भाजपा जब ठोस ढंग से जवाब नहीं दे पाई तो उसने हनुमान के नए अवतार का संदेश जनता के बीच भेजा। यूपी के धार्मिक सांस्कृतिक मंत्री ने बयान दे डाला कि जो सभी के फटे में टांग अड़ाए वो जाट होता है और इसलिए हनुमान जी जाट थे। अब सारा ध्यान नसीरुद्दीन शाह द्वारा उठाए गए मुद्दे से भटकर फिर से हनुमान की जाति पर चला गया। वैसे भी जाट की जो पहचान भाजपा ने बताई वो भी अपने आप में जाटों को नीचा दिखाने की साजिश है। क्या जाट पढ़े लिखे नहीं हैं, क्या वे रिसर्च और तमाम तरह के प्रोफेशन में नहीं हैं लेकिन उनकी निगेटिव छवि पेश की जा रही है कि जाट तो हर किसी के फटे में टांग अड़ाता है।

दरअसल, इसकी आड़ में हनुमान की जाति बतानी नहीं थी बल्कि जाट को नीचा दिखाना था या उसकी छवि निगेटिव बनानी थी। जनता की मूर्खता की वजह से भाजपा अभी तक अपने इस तरह के खेल के जरिए कामयाब रही है।

बहुत पलटी मार रहा है इस बार यह राजनीतिक मौसम वैज्ञानिक

पिता-पुत्र की जोड़ी फिर से एनडीए में रुकने को तैयार

नई दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी के आजकल बुरे दिन चल रहे हैं। एक तरफ तो पार्टी तीन राज्यों में सत्ता गवां बैठी, वहीं दूसरी तरफ एक के बाद एक सहयोगी एनडीए से छिटकते जा रहे हैं। टीडीपी और रालेसपा के बाद अब लोजपा ने भी आंखें दिखानी शुरू कर दी है।

अभी तो फिलहाल भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह से मुलाकात के बाद रामविलास पासवान के तेवर थोड़े कम होते हुए दिख रहे हैं लेकिन बीते दिनों उनके सुपुत्र चिराग पासवान ने जिस तरह से ट्वीट कर भाजपा पर निशाना साधा था, उससे मौसम वैज्ञानिक के फिर से पलटी मारने की संभावनाएं बढ़ गई थी। ऐसे भी उनके ट्रैक रिकॉर्ड को देखते हुए चुनावी साल में उनके पलटने की खबरें मीडिया में तैरने लगती है। देश के लोग इन्हें प्यार से 'मौसम वैज्ञानिक' कहते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार से संचार मंत्री के पद से हटाए जाने के बाद राम विलास पासवान काफी परेशान रहते थे। बड़ा विभाग छिन जाने से उन्हें बेइज्जती महसूस होती थी। कहा जाता है कि पासवान ने तत्काल इस्तीफा देने का मन बना लिया था। इस्तीफा देने की अपनी इस इच्छा को उन्होंने दिल्ली में रहने वाले अपने एक पत्रकार मित्र से शेयर किया था। मित्र ने सलाह दी, 'जल्दबाजी का काम शैतान का होता है. लोहा गरम होने दीजिए, तब हथौड़ा मारना ठीक होगा।'

2002 में गोधरा कांड के बाद पूरे गुजरात में दंगा हो गया। राम विलास पासवान ने मंत्री पद के साथ साथ एनडीए से भी ये कहते हुए रिश्ता तोड़ लिया कि 'हम दंगा कराने वालों के पक्ष में रहने वाली सरकार के घर का सदस्य बनकर नहीं रह सकते हैं।

फिर थोड़े ही दिनों के बाद पासवान ने कांग्रेस की नेतृत्व वाली यूपीए ज्वायन कर ली और जब 2004 में सरकार बनी तो मंत्री बन गए। रेलवे विभाग को लालू प्रसाद ने हथिया लिया तो पासवान रूठ कर कोप

भवन में चले गए। विश्वनाथ प्रताप सिंह के मान मनौवल के बाद केमिकल तथा फर्टिलाइजर विभाग का पद ग्रहण किया।

हालिया समय में बिहार एनडीए में चल रही राजनीतिक उठापटक को किसी भी पावर के चश्मे से देखने से ऐसा नहीं लगता है कि वह इस मुकाम पर पहुंच गई है जो राम विलास पासवान को संकेत दे या सावधान करे कि आप बाय-बाय करें और यूपीए के साथ चले जाएं क्योंकि वह गठबंधन 2019 के महाभारत में विजयश्री हासिल करेगा।

लालू यादव और राम विलास पासवान 2009 लोकसभा तथा 2010 विधानसभा चुनाव एक साथ लड़े पर एनडीए के हाथो बुरी तरह पराजित होकर जल्द ही अलग हो गए। अलगाव पर प्रतिक्रिया देते हुऐ लालू यादव ने पहली बार पासवान का नामकरण मौसम वैज्ञानिक के रूप में करते हुए बयान दिया, 'राम विलास पासवान इसरो के मौसम वैज्ञानिक हैं। उनको पता चल गया है कि 2014 की अगली सरकार एनडीए की बनने वाली है।

बहरहाल, हाल के तीन राज्यों में चुनावी हार ने स्वभाविक रूप से बीजेपी को बैकफुट पर ला दिया है। पासवान को लग रहा है कि एनडीए के भीतर जो भाव और तवज्जो नीतीश कुमार को दी जा रही है, वह उनके साथ नहीं हैं। वो चाहते हैं कि सीट बंटवारे के मामले में फैसला जल्द हो जाए। लेकिन आज जो पत्र चिराग पासवान ने पीएम को लिखा है उससे स्पष्ट है कि मामला सीट से आगे निकलता जा रहा है। बहरहाल, अमित शाह ने बाप बेटे को मनाकर हालात संभालने की कोशिश की है। फिलहाल पासवान एनडीए में रुकने को तैयार हो गए हैं और बदले में भाजपा और नीतिश कुमार की जेडीयू उन्हें बिहार की छह लोकसभा सीटें चुनाव लड़ने के लिए छोड़ेगी।

आने वाले दिनों में एनडीए की राजनीति किस करवट बैठेगी, इसका आकलन करना कठिन है। लेकिन अभी की राजनीति मौसम वैज्ञानिक राम विलास पासवान के इर्द-गिर्द परिक्रमा कर रही है। राम विलास पासवान बिहार से आते हैं। वहां के दलित वोटबैंक में उनका खासा असर है, खासतौर पर हाजीपुर-वैशाली के इलाके में। 2014 के चुनाव में उनके 6 सांसद जीते थे। वह एनडीए के साथ थे और राज्य में एनडीए ने 22 सीटें जीती थीं। 2019 के लिए बिहार में समीकरण बनाने की जोर-आजमाइश शुरू हो चुकी है। बीजेपी, जेडीयू, लोजपा और रालोसपा में सीटों को लेकर खींचतान की बात सामने आ रही है। ऐसे में पासवान के बदले सुर नए राजनीतिक संकेतों की तरफ इशारा करने पर मजबूर कर रहे हैं। इसका कारण भी फिर वही 'मौसम वैज्ञानिक' वाली उपाधि ही है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06